वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

# वैद प्रकाश

मासिक पत्र (6-7 प्रतिमाह) मूल्यः ५ रुपये (३०/-वार्षिक) अप्रैल २०१८

कुल पृष्ठ संख्या २०, वजनः 40 ग्राम
प्रकाशन तिथिः 4 अप्रैल 2018

## अन्तःपथ

महाप्रयाण अर्द्ध शताब्दी लेखमाला-1 | ३ से ६
पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय और उनकी साहित्य साधना
—राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर
अन्त्येष्टि संस्कार प्रबन्ध को लेकर आर्यसमाज से बृहद् हिन्दू समाज की अपेक्षा—एक वस्तुपरक विमर्श | ६ से १०
—भावेश मेरजा, भरूच
"देश को आजाद कराने का मन्त्र किसने दिया?" | १० से १३
—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून
शूरता की मिसाल-पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर | १४ से १८
(6 मार्च को पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस के अवसर पर)—डॉ. विवेक आर्य

ओ३म्
आचरण और व्यवहार से कुल का पता चलता है।
बोली से मनुष्य के देश का पता चलता है।
आदर भाव से प्रीति का पता चलता है।
आँखों से मन के भाव का पता चलता है।
संकट के समय धैर्य का पता चलता है।
संगति से मनुष्य की प्रकृति का पता चलता है
और कोई भी काम कैसा है इसका पता उसके परिणाम से चलता है।

# सब कुछ आपके अंदर ही है

एक आदमी बहुत बड़े संत-महात्मा के पास गया और बोला, 'हे मुनिवर! मैं राह भटक गया हूँ, कृपया मुझे बताएँ कि सच्चाई, ईमानदारी, पवित्रता क्या है?' संत ने एक नज़र आदमी को देखा, फिर कहा, 'अभी मेरा साधना करने का समय हो गया है। समाने उस तालाब में एक मछली है, उसी से तुम यह सवाल पूछो, वह तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे देगी। वह आदमी तालाब के पास गया। वहाँ उसे वह मछली दिखाई दी, मछली आराम कर रही थी। जैसे ही मछली ने अपनी आँख खोली तो उस आदमी ने अपना सवाल पूछा। मछली बोली, 'मैं तुम्हारे सवाल का जवाब अवश्य दूँगी किन्तु मैं सोकर उठी हूँ, इसलिए मुझे प्यास लगी है। कृपया पीने के लिए एक लौटा जल लेकर आओ।' वह आदमी बोला, 'कमाल है! तुम तो जल में ही रहती हो फिर भी प्यासी हो?' मछली ने कहा, 'तुमने सही कहा। यही तुम्हारे सवाल का जवाब भी है। सच्चाई, ईमानदारी, पवित्रता तुम्हारे अंदर ही है। तुम उसे यहाँ-वहाँ खोजते फिरोगे तो वह सब नहीं मिलेगी, अतः स्वयं को पहचानो। उस आदमी को अपने सवाल का जवाब मिल गया।

कथा सार...

सुख-शांति, ईमानदारी, पवित्रता व सच्चाई इत्यादि की खोज में मानव-कहाँ-कहाँ नहीं भटकता...क्या...क्या जतन नहीं करता, फिर भी उसे निराशा ही हाथ लगती है। वह नहीं जानता, जिसकी खोज में वह भटक रहा है, वह तो उसके भीतर ही मौजूद है। उसकी स्थिति 'पानी में रहकर मीन प्यासी' जैसी हो जाती है।

सुख का अर्थ केवल कुछ पा लेना नहीं अपितु जो है उसमें संतोष कर लेना भी है। जीवन में सुख तब नहीं आता जब हम ज्यादा पा लेते हैं बल्कि तब भी आता है जब ज्यादा पाने का भाव हमारे भीतर से चला जाता है। सोने के महल में भी आदमी दुखी हो सकता है यदि पाने की इच्छा समाप्त नहीं हुई हो और झोपड़ी में भी आदमी परम सुखी हो सकता है यदि ज्यादा पाने की लालसा मिट गई हो तो। असंतोषी को तो कितना भी मिल जाये वह हमेशा अतृप्त ही रहेगा।

सुख बाहर की नहीं, भीतर की संपदा है। यह संपदा धन से नहीं धैर्य से प्राप्त होती है। हमारा सुख इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हम कितने धनवान है अपितु इस बात पर निर्भर करता है कि हम कितने धैर्यवान हैं। सुख और प्रसन्नता आपकी सोच पर निर्भर करती है।

# वेदप्रकाश

संस्थापक : **स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द**

वर्ष ६७ अंक ९ वार्षिक मूल्य : तीस रुपये, एक प्रति ५ रुपये, अप्रैल, २०१८

सम्पा॰ **अजयकुमार** पूर्व सम्पादक : स्व॰ **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

**महाप्रयाण अर्द्ध शताब्दी लेखमाला-1**

## पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय और उनकी साहित्य साधना

*-राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर-१५२११६*

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का निधन सन् १९६८ में हुआ था। यह वर्ष उनके महाप्रयाण का अर्द्ध शताब्दी वर्ष है। आर्यसमाज ने अपने जीवन की पहली शताब्दी में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, पं० लेखराम, पं० आर्यमुनि जी, स्वामी दर्शनानन्द इत्यादि कई सिद्धहस्त लेखकों तथा गम्भीर विद्वानों को जन्म दिया इन सबकी लेखनी व साहित्य साधना की अपनी-अपनी विशेषतायें तथा महत्त्व हैं। आर्यसमाज के अब तक के इतिहास में पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की साहित्य सेवा को निर्विवाद रूप में बेजोड़ कह सकते हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से भी उनकी साहित्य साधना बेजोड़ है और पृष्ठ संख्या की दृष्टि से भी वे आर्यसमाज ही नहीं विश्व साहित्य के इतिहास में बेजोड़ साहित्यकार माने जाते हैं।

उनकी मध्यमान पृष्ठ संख्या प्रतिवर्ष पाँच सौ पृष्ठ तक पहुँचती है। विश्व के विरले साहित्यकारों को ही ऐसा गौरव प्राप्त रहा है। एक और दृष्टि से आप की साहित्य साधना बेजोड़ है। आर्यसमाज में किसी भी और प्रमुख विचारक व साहित्यकार को इतने लम्बे समय तक साहित्य सृजन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका। श्री आचार्य उदयवीर जी कुछ-कुछ आपके आस-पास दीखते हैं।

आप ही आर्यसमाज के एक ऐसे लेखक हैं जिन्होंने चार भाषाओं में उच्च कोटि का साहित्य दिया है। इसके साथ ही आपको गद्य और पद्य दोनों में उच्च कोटि का साहित्य देने का गौरव प्राप्त रहा है। इस यशस्वी विभूति ने पद्य साहित्य भी एक भाषा में ही नहीं प्रत्युत दो भाषाओं में दिया है। वैसे आप छः भाषाओं के जाने माने विद्वान् थे। आपने एक विधा में ही नहीं लिखा, कई

विधाओं में बड़ी दक्षता से अपनी लेखनी चलाई है। किस-किस विषय में आपने लिखा? यह भी एक लम्बी कहानी है। संवाद शैली में आपने लिखा है। जीवनी साहित्य के लिखने में भी आप एक यशस्वी लेखक थे। भाष्यकार, टीकाकार आप थे। सिद्धि-प्रसिद्धि प्राप्त अनुवादक आप थे। यद्यपि पत्र साहित्य में भी आप किसी से पीछे नहीं थे। पत्र लेखन पर आपने एक नवोदित लेखक के प्रशिक्षण के लिये एक उत्तम पुस्तक लिखी थी परन्तु, आप द्वारा लिखे गये पठनीय, प्रेरक तथा विचारोत्तेजक सहस्त्रों पत्रों को न तो आपकी सुयोग्य सन्तान ने सुरक्षित किया और न ही आपके मित्रों ने, आर्य नेताओं ने, भक्तों ने संग्रहीत किया। केवल गंगाज्ञान-सागर ग्रन्थ माला में इस लेखक के नाम लिखे गये महत्त्वपूर्ण पत्र ही संग्रहीत होकर प्रकाशित हुये है।

मानवजाति और साहित्य प्रेमी आपकी कोटि के विचारक की पत्र-सम्पदा से वञ्चित रह गई है। दोषी हम भक्तों प्रशंसकों को मानते हैं। श्रीमान् प्रियव्रतदास जी उरिसा के नाम उनके पत्र अभी अप्रकाशित हैं। हम उन्हें प्राप्त करने और प्रकाशित करने का पूरा प्रयास करेंगे। आपने धार्मिक, दार्शनिक विषयों पर तो जी भर कर लिखा ही। तुलनात्मक धर्माध्ययन पर भी बहुत पठनीय और मौलिक साहित्य दिया है।

आप राजनीति से तो अलिप्त ही रहे परन्तु देश की समस्याओं पर और ज्वलन्त प्रश्नों पर दैनिक, साप्ताहिक व मासिक पत्र पर यदा-कदा ज्ञान प्रसूता लेखनी चलाई। आर्यसमाज के प्रत्येक बड़े आन्दोलन की सफलता का श्रेय आपकी लौह लेखनी को भी प्राप्त रहा है यथा आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के इतिहास लेखकों ने उस सत्याग्रह के प्रचार विभाग (Publicity Deptt.) पर कुछ लिखा ही नहीं। हम ने इस चुभते अभाव को दूर करने का यत्न किया है। इस सत्याग्रह की विजय का एक मुख्य कारण इसका प्रचार विभाग भी था। इसमें आपके अतिरिक्त श्री पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री, पं० रुचिराम जी तथा एस. चन्द्र (स्वामी ओम् आश्रित)—ये चार दक्ष विद्वान् थे।

उपाध्याय जी लिखित सत्याग्रह सम्बन्धी अंग्रेजी साहित्य की चर्चा ब्रिटिश संसद में भी होती रही। यह कोई छोटी उपलब्धि तो थी नहीं!

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के समय निज़ाम उस्मान की एक उर्दू कविता के उत्तर में लिखी गई आपकी एक कविता ने सत्याग्रह आन्दोलन में एक नई जान फूँक दी। सारी निज़ामशाही में इस कविता से खलबली सी मच गई। सारी

कविता तो किसी ने सम्भालकार न रखी। केवल एक पद्य वर्तमान पीढ़ी तक पहुँचाने में हम समर्थ हैं। इन दो पंक्तियों से ही समीक्षक कविवर गंगाप्रसाद उपाध्याय की कविता के स्तर का निर्णय कर सकते हैं। निज़ाम की एक पंक्ति को पढ़कर हमारे पाठक उपाध्याय जी की कविता का ठीक-ठीक मूल्याङ्कन कर सकेंगे। निज़ाम ने लिखा था:–

**'बन्द नाकूस हुआ सुन के नदाय तकबीर'**

अर्थात् **'अल्लाह हू अकबर'** के जयकारों के भय या आतंक को सुनकर मन्दिरों की शंख ध्वनि बन्द हो गई। अब उपाध्याय जी की दो पंक्तियाँ भी पढ़िये:–

**तीन धागे ये फ़कत सूत के कच्चे लेकिन**
**बाज़ी ज़ुन्नार में हैदरी तलवार पै भी**

अर्थात् भले ही हिन्दुओं के यज्ञोपवीत के तीन तार कच्चे सूत के ही हैं परन्तु इस तीन कच्चे धागों से बने यज्ञोपवीत ने हैदरी तलवार पर बाज़ी मार ली है।

उपाध्याय जी की लौह लेखनी की लोकप्रियता के महत्त्व को इससे ही जाना जा सकता है कि उनके जीवन काल में ही आर्यसमाज की बड़ी-बड़ी सभाओं ने उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में उनके साहित्य को सोत्साह प्रकाशित किया। आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त दोनों प्रकाशन संस्थानों राजपाल एण्ड सन्ज तथा गोविन्दराम हासानन्द ने भी आपका साहित्य प्रकाशित करके यश प्राप्त किया। पंजाब से लेकर दक्षिण की प्रतिनिधि सभाएँ भी आपके साहित्य को प्रकाशित करके गौरवान्वित हुई। साम्यवादी शासन के कारण रूस में कभी भी भारतीय दर्शनों पर, वैदिक धर्म पर कुछ भी न लिखा गया। साम्यवाद की रूस से विदाई के पश्चात् वहाँ के एक प्रख्यात लेखक ने आर्य समाज और ऋषि दयानन्द जी पर एक उत्तम लेख लिखा है। उस लेखक के लेख की प्रामाणिकता का कारण यही है कि उसने आपके साहित्य को बहुत ध्यान से पढ़ा है।

आपके जीवनकाल में ही आपके ट्रैक्टों के देश भर की कई भाषाओं में अनुवाद छप गये और तो और तमिलनाडु में भी आपके कई ट्रैक्टों के देश के स्वतन्त्र होने से पूर्व ही तमिल अनुवाद छप गये। यह कोई साधारण सी उपलब्धि तो है नहीं। सिंधी में, मराठी में, कन्नड़ में, मलयालम में, बंगला भाषा में उड़िया, गुजराती सब में आपका साहित्य उपलब्ध है। बस एक और बिन्दू पर लिखकर हम आज इस लेख को समाप्ति की ओर ले जाकर लेखनी को विराम देंगे।

**इतनी लोकप्रियता!**:–आर्यसमाज में आप ही ऐसे पहले विचारक, विद्वान् व दार्शनिक हैं जिनके मरणोपरान्त उसके लेखों व पुस्तकों के इतने व्यापक स्तर पर प्रकाशन हुआ है। गंगा–ज्ञान सागर ग्रन्थमाला का चार भागों में प्रकाशन अपने आप में एक कीर्तिमान है। प्रकाशन के सत्रह वर्षों में इस ग्रन्थ माला का तीसरा संस्करण श्री अजय जी धूमधाम से प्रकाशित कर रहे हैं। अन्य–अन्य भाषाओं में भी इस ग्रन्थ माला का निरन्तर प्रकाशन हो रहा है। गंगा ज्ञान धारा तीन भागों में एक और ग्रन्थमाला छप चुकी है। इसके चौथे भाग की भी पाठक उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आपके कुछ ग्रन्थों के प्रकाशन से विरोधियों में कुछ हलचल तो मची। आपके एक ग्रन्थ को प्रतिबंधित करवाने की कुचालें सब धरी धराई रह गईं। आपके किसी भी ग्रन्थ में विरोधी ऐसा कुछ भी न पा सके और न दिखा सके जो आपत्तिजनक कहा जा सके। आर्यसमाज यदि हाथ पैर मारता तो विश्व की कई और भाषाओं में आपके कुछ ग्रन्थ छप सकते थे। आपने हिन्दी का पहला आधुनिक व्याकरण लिखा जिसकी हिन्दी साहित्यकारों ने अपराधिक उपेक्षा की है।

आप अपने पीछे एक सशक्त प्रभावशाली शिष्य परम्परा छोड़ गये। यह कोई छोटी उपलब्धि तो नहीं? –क्रमशः

## अन्त्येष्टि संस्कार प्रबन्धन को लेकर आर्यसमाज से बृहद् हिन्दू समाज की अपेक्षा–एक वस्तुपरक विमर्श

*–भावेश मेरजा, भरूच*

[ **भूमिकाः** *गत सप्ताह एक आर्यसमाज–हितेच्छु प्रबुद्ध वैज्ञानिक ने फेसबुक पर अपने एक सहकर्मी के अन्त्येष्टि संस्कार के प्रसंग का विवरण प्रस्तुत किया जिसमें आर्यसमाज का भी उल्लेख किया गया था। उनकी इस पोस्ट को पढ़कर कई अन्य आर्यसमाज–हितेच्छु व्यक्तियों ने इस पर अपनी–अपनी टिप्पणी व्यक्त की। आर्यसमाज के सदस्यों, नेताओं तथा विद्वानों को इस विषय पर मन्थन करने की महती आवश्यकता है, जिससे आर्यसमाज को अधिकाधिक समाज–उपकारक किया जा सके– इस उद्देश्य से विमर्श को संकलित कर यहाँ प्रस्तुत किया जाता है।*
*–भावेश मेरजा]*

आज एक colleague (सहकर्मी) की असामयिक मौत के बाद उसके

शव को मोर्चरी में ले जाया गया। मोर्चरी में आए हुए आज के केसेस में दो आत्महत्या वाले थे। उनकी कहानी जानकर लगा कि हम अपनी जिन्दगी को कितने सस्ते में निबटा दे रहे हैं और हमारे समाज ने हमारे जिन्दा रहने को कितना मुश्किल व महंगा बना दिया है। खैर, आज जो मैं लिखने जा रहा हूँ उसका विषय कुछ और है। जब अन्दर सहकर्मी का पोस्ट मार्टम चल रहा था तो बाहर उसके परिजनों व वहाँ उपस्थित अन्य सहकर्मियों के वार्तालाप में मुझे 'आर्यसमाज' शब्द सुनाई दिया। मैं भी उनके पास पहुँच गया और मालूम करने पर पता चला कि परिजन चाहते हैं कि दाह-संस्कार आर्यसामाजिक रीति से सम्पन्न हो। हालाँकि वो पौराणिक थे लेकिन जवान मौत के कारण वह कोई तेहरामी/मृतक भोज आदि नहीं करना चाहते थे और तीन दिनों में ही हवन आदि कराकर जल्द से जल्द इसका समापन चाहते थे। इसके लिए उन्होंने निगमबोध घाट पर व्यवस्था कराने के लिए किसी को भेज भी दिया था। मैंने पूछा कि क्या किसी आर्यसामाजिक पण्डित (पुरोहित) की व्यवस्था करनी है तो बताया गया कि नहीं पण्डित वहीं निगम बोध घाट पर उपलब्ध होते हैं और वहाँ पर इस संबंध में बात कर ली गई है। मुझे बड़ा सुखद आश्चर्य ओर संतोष हुआ कि चलो आर्यसमाज ने ऐसी जरूरत की जगह तो अपनी उपस्थिति बनाई हुई है। करीब 4 बजे शाम को हम निगमबोध घाट पहुँचे तो हमारी एम्बुलेंस के पास तिलक लगाए और गुटखा चबाते हुए एक दो लफंडर से आकर खड़े हो गए। उन्हें देखकर मेरे मृत सहकर्मी के भाई ने मुझे पूछा कि ये कौन लोग हैं। तो थूक गटकते हुए उन्होंने बताया कि हम पंडित हैं और हम संस्कार कराँएगे। मैंने कहा कि लेकिन इन्होंने तो संस्कार के लिए शायद अलग से किसी पण्डित जी से बात की हुई है? तो उनमें से एक पण्डित बोला कि हाँ हम ही तो वो हैं और आर्यसामाजिक रीति से ही तो यह संस्कार होना है ना? मृतक के भाई ने कहा हाँ-हाँ! आर्यसामाजिक रीति से ही हमें कराना है। मुझे फिर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आर्यसामाजिक पुरोहित भी ऐसे लफंडर टाइप के दिखने लगे आजकल। फिर मुझे लगा कि शायद ये मजदूर टाइप के पुरोहित होंगे और पौराणिक व आर्यसामाजिक दोनों ही रीतियों से संस्कार कराकर पैसा कमाते होंगे। खैर, 1 घंटे बाद मृतक को स्नान आदि कराया गया और घर परिवार वालों को संकेत से यह संदेश भी दिया गया कि जिसे जो दक्षिणा देनी हो वह दे दे। उसके बाद दाह संस्कार आरम्भ हुआ जिसमें रामनाम सत्य है, सत्य बोलो गत्य है जैसा कुछ उसने 15-20 बार बोला व बुलवाया और 11 बार गायत्री मंत्र का उच्चारण किया। इसके अलावा किसी भी मंत्रादि का पाठ

नहीं किया गया। इस सब कर्मकाण्ड को वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति आर्यसामाजिक रीति से सम्पन्न होता हुआ समझता रहा और मैं मन ही मन सोचता रहा कि ये आर्यसमाज के साथ अन्याय हो रहा है या आर्यसमाज इन अनभिज्ञ व शोकातुर परिजनों के साथ अन्याय कर रहा है। खैर जो भी हो, आर्यसमाज अमर रहे!

**उपर्युक्त मूल पोस्ट पर प्राप्त कतिपय महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ**

1. मुझे लगता है कि ऐसे अयोग्य बहुरूपिये "पण्डित" दोनों–आर्यसमाज एवं मृतक परिवार के साथ अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु अन्याय कर रहे हैं। आर्यसमाज अपने आधिकारिक पुरोहितों की सेवा वहाँ उपलब्ध करा सकता तो ऐसा नहीं होता।
2. बिल्कुल...आर्यसमाज को अपनी सेवाएँ सुलभ बनानी चाहिए। दिल्ली नगर निगम से बात करके वहाँ अपने एक दो पुरोहितों की उपस्थिति का प्रबन्ध किया जा सकता है।
3. आर्य समाज में कोई भी योग्य पुरोहित कार्य नहीं करते हैं...न उन्हें यथायोग्य दक्षिणा मिलती है न सम्मान। मैंने बहुतों को पुरोहिताई छोड़कर अन्य कार्य करते देखा है।
4. बिल्कुल सही कहा, अभी भी बहुत से लोगों की आर्य समाज में बहुत श्रद्धा है किन्तु आर्य समाज की ही पहुँच वहाँ तक नहीं हो पाती। बहुत से पदाधिकारी भी वक्त जरूरत पड़ने पर दैनिक यज्ञ या विशेष यज्ञ या संस्कार नहीं करा पाते। इर्मानदार एवं योग्य पुरोहित भी कम ही हैं लेकिन हैं।
5. सादर बहुत कठोर सत्य बताता हूँ–हमने जिन्हें आँख खुलते अच्छे धार्मिक आर्यसमाजी पाया, वे पुरोहित बनकर भ्रष्ट हो गये। यहाँ तक कि अपने 'जिजीमानो' के समक्ष आर्यसमाज के घनघोर निन्दक हो गये! इसमें भी कहीं न कहीं भ्रष्टाचार घुस आया है। पुरोहिताई के कारण कई लोगों को पतित होते देखा गया है। इसमें भी शुचिता आवश्यक होती है। यदि नहीं है तो यह व्यवसाय की भाँति ही है। अपरिग्रह विलुप्तप्रायः है। इसमें एक दूसरा उदाहरण स्व. आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री का हमारे सामने है। वे कहीं भी हवन इत्यादि कराते थे तो दक्षिणा नहीं लेते थे। कहीं बोलने जाते थे तो भी किराया अपनी जेब से ही देते थे। अपने महर्षि दयानन्द सरस्वती शिशु मन्दिर का उदाघटन करने मैंने उनको विशेष तौर पर आमन्त्रित किया। इस कार्यक्रम में उन्होंने दक्षिणा ली और बाद में दक्षिणा जितनी राशि रखकर हमारे शिशु मन्दिर को तुरन्त वापस कर दी। मुजफ्फरनगर तक

मैं उनके साथ जाता था लेकिन अपना किराया स्वयं देते थे। अन्तिम बार जब आप हमारे घर से अपने गाँव लौटे तो मैं मुजफ्फरनगर तक उनके साथ जा रहा था तब मैंने उनका बस किराया देने को जोर दिया तो नाराज होकर बोले–"देखो!...जी, यदि मुझे अपने यहाँ नहीं बुलाना है तो मेरा किराया दे दीजिए!" 80 के उपरान्त वे अकेले सिद्धान्तों पर बोलने जाया करते थे और कभी किसी से रुपया नहीं लेते थे। आप पौराणिक ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे परन्तु आपकी गजब की सैद्धान्तिक समझ और सैद्धान्तिक आचरण चमत्कृत कर देता था। आपका बड़ी आयु में भी भोजन युवकों जैसा था अर्थात् घी, दूध आदि को बड़े चाव से लेते थे। पाचन शक्ति बहुत अच्छी थी। दोनों समय सन्ध्या करते थे और कहीं न कहीं वैदिक उपदेश देने जाते थे। अधिकतर धर्मप्रचार के लिये यायावर ही रहा करते थे। वैदिक व्याकरण के जानने वाले आप हमारे इधर एकमात्र वैयाकरण थे। अस्तु। क्षमा चाहूँगा विषय हटकर लिखने के लिये। इस बहाने मुझे आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री का स्मरण हो आया था।

6. बहुत लज्जाजनक स्थिति में रख दिया गया है आर्यसमाज को!
7. विवरण पढ़कर कष्ट हुआ। स्थिति पर शीघ्र नियन्त्रण करके सुधार की आवश्यकता है।
8. यह पढ़कर और दुःख हुआ कि आर्य सामाजिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार की चाह होते हुए भी परिवार जन ठगे गये। जी हाँ, मेरी दृष्टि में तो यह ठगी ही है। आर्य सामाजिक पण्डित उस समय उपलब्ध नहीं हुआ इसके दो कारण हो सकते हैं–पहला यह कि परिवार जन सही लोगों से सम्पर्क ही नहीं कर पाये और "श्मशान के ठगों" द्वारा ठगे गये। दूसरा कारण यह कि आर्यसमाज अपने पुरोहित की सेवा उपलब्ध कराने में असफल रहा। और इस स्थिति में विडंबना यह कि निगमबोध श्मशान घाट का कुछ प्रबन्धन कार्य दिल्ली के एक बड़े आर्यसमाज के अधीन है। कौन सा कार्य और कौन सा समाज है, यह स्मरण नहीं, परन्तु ऐसा वहाँ पट्टिकाओं पर लिखा देखा है। निगमबोध पर आर्यसामाजिक अन्त्येष्टि यज्ञ के लिये कुछ वेदियाँ अवश्य हैं।
9. आजकल निगमबोध घाट का प्रबन्ध किसी आर्य समाज के पास नहीं है।
10. पुरोहिताई के कारण व्यक्ति का पतनोन्मुख हो जाना काफी हद तक स्वाभाविक है और यह बात भी सही है कि जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रबन्ध होना भी आवश्यक है। वह भी सम्भव है कि ऐसी दशा

में व्यक्ति को जो भी पहले या आसानी से मिल जाता है उसी पर भरोसा कर लेता है या कहें कि करना पड़ता है। लेकिन दूसरा कारण भी सत्य ही है क्योंकि अब वहाँ पर किसी भी आर्यसमाज आदि के नाम या सम्पर्क सूत्र की पट्टिका आदि नजर नहीं आती।

11. वैसे यदि आर्यसमाज की कोई संस्था उन इच्छुक गृहस्थों को जिनके पास अपनी आजीविका का स्थायी प्रबन्ध है, कर्मकाण्ड के कार्यों के लिए प्रशिक्षित करे और उनको संस्कार आदि कराने के 10-20 अवसर प्रदान कराके व्यवहारिक ज्ञान दें, तो इस तरह के गृहस्थ जहाँ और जब संभव हो अपनी सेवाएँ देकर आर्यसमाजों का बोझा भी कुछ हद तक कम कर सकेंगे। और इन आवाराओं से तो अच्छा ही संस्कार करा देंगे।

## "देश का आजाद कराने का मन्त्र किसने दिया?"

*–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून*

भारत संसार का सबसे पुराना देश है। इसका पुराना नाम आर्यावर्त था। सृष्टि के आदिकाल में ईश्वर ने तिब्बत में मनुष्यों को उत्पन्न किया था। ईश्वर ने ही इन मनुष्यों को भाषा, सत्य धर्म और संस्कृति के ज्ञान के लिए चार वेदों का ज्ञान दिया था। ब्रह्मा जी मैथुनी सृष्टि में उत्पन्न प्रथम ऋषि, वेदज्ञ, योगी, ईश्वर व आत्मा के सत्य स्वरूप के जानकार एवं आचार व धर्म शास्त्र के ज्ञाता थे। उन्होंने ही सृष्टि के आरम्भ में अन्य लोगों में वेदों का प्रचार किया था। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद पढ़ कर मनुष्य इस सृष्टि को भली प्रकार से जान व समझ सकते हैं। ऐसा ही हुआ भी था। समय के साथ-साथ तिब्बत में मनुष्यों की संख्या में वृद्धि होने लगी और आपस में लड़ाई-झगड़े भी होने लगे। उस समय तिब्बत के अतिरिक्त सारी पृथिवी मनुष्यों से शून्य थी। इस कारण उन लोगों में सीधे व सरल स्वभाव के आर्य तिब्बत से सीधे भारत की भूमि में आकर इस भूमि को सर्वोत्तम जानकर यहाँ बस गये। इससे पूर्व यह पूरी भूमि खाली पड़ी थी। यहाँ कोई मनुष्य जाति रहती नहीं थी। तिब्बत में रहते हुए आर्यों ने विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रकार के वायुयान व अन्य वैज्ञानिक उपकरण आदि बना लिये थे। यह लोग अपने-अपने वायुयानों में आकाश में भ्रमण करते थे। इन्हें विश्व में जहाँ जो स्थान जीवन यापन के लिए सुन्दर व अनुकूल जलवायु वाला लगता था, वहाँ अपने परिवारों व मित्र संबंधियों को ले जाकर वहाँ बस्तियाँ बसा दिया करते थे। इस प्रकार वेद के अनुयायी आर्यों द्वारा तिब्बत से आरम्भ होकर पूरे विश्व में मनुष्यों को बसाया

और समय के साथ-साथ नये-नये देश व भाषायें आदि बनती गईं। मनुष्योत्पत्ति को हुए 1.96 अरब वर्ष हो चुके हैं। इतनी लम्बी अवधि में भारत के लोग विश्व के अनेक देशों में जाते और बसते रहे और इस प्रकार से विश्व के अनेक देश बसते गये।

भारत की बात करें तो यहाँ वैदिक धर्म व संस्कृति महाभारत काल व उससे कुछ सौ वर्षों पूर्व तक उन्नति के चरम पर रही है। भारत और विश्व में एक ही धर्म व संस्कृति थी जो वेद पर आधारित थी। पाँच हजार वर्ष पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिसमें बहुत बड़ी संख्या में वीर सैनिकों सहित विद्वान भी मारे गये। इस कारण भारत में अव्यवस्था फैल गई। शिक्षा का प्रचार व विस्तार बन्द हो गया। समय के साथ लोगों में वेद व धर्म की बातें भी समझने में कृतकार्यता नहीं रही। इस अक्षमता से विश्व में आर्य संस्कृति का प्रचार भी बाधित हुआ। वहाँ भी अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न हो गये। भारत में भी समय के साथ यज्ञों में पशु हिंसा होने लगी। इसका परिणाम बौद्ध व जैनमत का आविर्भाव हुआ। इसके बाद संसार में ईसाईमत का आविर्भाव भी हुआ। इन तीन मतों से पुराना मत पारसीमत था जो एक धार्मिक पुरुष जरदुस्त महाशय ने चलाया था। उन्होंने जो धर्म पुस्तक दी वह जन्दावस्ता के नाम से प्रसिद्ध है। ईसाईमत के बाद इस्लाममत का उखव होता है। यह सभी मत सत्य वेदमत के विलुप्त होने के कारण उत्पन्न हुए। भारत में बौद्ध व जैनमत की स्थापना व आचार्य शंकराचार्य के वैदिक मत के प्रचार से भी अज्ञान, अशिक्षा, अन्धविश्वास, कुरीतियाँ, सामाजिक असमानता दूर नहीं हुई। वेदों का अल्प ज्ञान ही सीमित संख्या में लोगों में प्रचलित रहा। बाद में सायण आदि कुछ वेदभाष्यकार हुए परन्तु वह वेद के पदों व शब्दों के यथार्थ अर्थों को न जान सके जिस कारण वेदों के सत्य अर्थों का प्रचार होने के स्थान पर मिथ्या अर्थों का ही प्रचार हुआ। इस प्रकार अज्ञान बढ़ता रहा। समाज कमजोर हो गया। तभी सन् 715 ईस्वी में मोहम्मद बिन कासिम ने भारत पर आक्रमण किया। भारत में अन्धविश्वासों और आपसी फूट का परिणाम यह हुआ कि उसने राजा दाहिर को पराजित किया। उसके बाद भारत पर विदेशी लुटेरों के आक्रमण जारी रहे और भारत का बड़ा भाग गुलाम हो गया। पहले भारत मुसलमानों का और बाद में अंग्रेजों का दास बना।

अंग्रेजों के समय में ऋषि दयानन्द सरस्वती जी का प्रादुर्भाव होता है। सन् 1863 में स्वामी दयानन्द जी ने मथुरा में गुरु विरजानन्द सरस्वती से वेदादि शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर वेदों का प्रचार करने के लिए कार्यक्षेत्र में पदार्पण

किया। उस काल में देश में धार्मिक अन्धविश्वास अपनी चरम सीमा पर थे। देश में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना ऊँच-नीच का व्यवहार करने वाली जाति प्रथा प्रचलित थी। स्त्री व शूद्रों को वेद और विद्या के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। मुस्लिम काल में हिन्दुओं पर अत्याचारों के कारण बाल विवाह व पर्दा प्रथा आरम्भ हो गई थी। ऋषि दयानन्द ने अध्ययन कर पाया कि यह सभी अन्धविश्वास हैं। वेदों से इनका समर्थन नहीं होता। उन्होंने अध्ययन से यह भी पाया कि वेद ही स्वत: प्रमाण धर्म व संस्कृति सहित ज्ञान विज्ञान के ग्रन्थ हैं। उन्हेंने अज्ञान व अन्धविश्वासों का खण्डन और वैदिक सत्य मान्यताओं का मण्डन प्रमाणों व युक्तियाँ आदि से किया। वह देश भर में घूमें और सर्वत्र वैदिक सत्य मान्यताओं का प्रचार किया। लोग मूर्तिपूजा और अन्य अन्धविश्वासों को छोड़ने लगे और अज्ञान व अविद्या सहित कुप्रथाओं से मुक्त एक नया भारत अस्तित्व में आने लगा। इसके साथ ही ऋषि दयानन्द ने अज्ञान व अविद्या को दूर करने के लिए 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ की रचना की। ऋषि दयानन्द ने देश की गुलामी व उसके कुपरिणामों को गहराई से देखा व अनुभव किया था। उन्होंने देश की आजादी का समर्थन किया। उनके प्राय: सभी ग्रन्थों सहित वेदभाष्य में प्रकट विचारों से देश की आजादी का समर्थन होता है। सत्यार्थप्रकाश के दो संस्करण प्रकाशित हुए। पहला सन् 1874 में तैयार हुआ। दूसरा उन्होंने सन् 1883 में तैयार किया जो उनकी मृत्यु के बाद सन् 1884 में प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ में देश की गुलामी का विरोध और आजादी का समर्थन करते हुए उन्होंने जो शब्द कहे वह स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य हैं। सत्यार्थप्रकाश आठवें समुल्लास में उन्होंने निम्न शब्द लिखे हैं:

"...ब्रह्मा का पुत्र विराट, विराट का पुत्र मनु, मनु का मरीच्यादि दश इनके स्वायम्भुवादि सात राजा और उनके सन्तान इक्ष्वाकु आदि राजा जो आर्यावर्त के प्रथम राजा हुए जिन्होंने यह आर्यवर्त बसाया है।

अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दु:ख भोगना पड़ता है।

कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य

प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना (देश स्वतन्त्र होना और सर्वत्र वेद का प्रचार होना) कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्र पुरुषों का काम है।"

देश को आजाद कराने की प्रेरणा करने वाले यह विचार ऋषि दयानन्द ने सन् 1883 में दिये थे। उस समय देश में आजादी की कहीं चर्चा कोई नहीं करता था। रूस व चीन में क्रान्ति नहीं हुई थी। कांग्रेस की स्थापना भी सन् 1885 में इसके बाद हुई। ऋषि दयानन्द ने देश को आजाद कराने की प्रेरणा न केवल सत्यार्थप्रकाश में ही की है अपितु अपने अन्य ग्रन्थ आर्याभिविनय, संस्कृतवाक्यप्रबोध सहित वेदभाष्य में वेदमन्त्रों की व्याख्या करते हुए भी की है। इससे ऋषि दयानन्द देश को आजादी का मन्त्र व विचार देने वाले पहले महापुरुष थे। देश ने उनको उनका उचित स्थान न देकर उनसे न्याय नहीं किया है। यह भी बता दें कि क्रान्तिकारी विचारों के शीर्ष महापुरुष पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा उन्हीं के साक्षात शिष्य थे। गांधी जी के गुरु गोपाल कृष्ण गोखले महादेव रानाडे के शिष्य थे और रानाडे जी महर्षि दयानन्द जी के सहयोगी व शिष्य थे। आर्यसमाज के सभी अनुयायी भी देश को आजाद कराने की तीव्र भावना रखते थे। स्वामी जी के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद बिस्मिल सहित देश के अनेक विचारक स्वामी दयानन्द जी के विचारों से प्रभावित थे। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि देश को आजादी का विचार व मन्त्र सबसे पहले स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने ही दिया था। स्वामी जी की मृत्यु एक गुप्त षडयन्त्र का परिणाम थी। उसमें स्वामीजी के अंग्रेज सरकार विरोधी इस प्रकार के विचारों का भी योगदान था। स्वामी दयानन्द जी ने सन् 1874 में लिखे सत्यार्थप्रकाश में भी अंग्रेज सरकार द्वारा नमक पर कर लगाने के विरोध में टिप्पणी की थी। अतः देश की आजादी का श्रेय महर्षि दयानन्द को है। राजनीतिक दल सत्य को कितना ही छुपा लें, लेकिन सत्य-सत्य ही रहता है और यह तथ्य है कि देश को आजाद करने का सबसे पहले विचार व मन्त्र ऋषि दयानन्द जी ने ही देशवासियों को दिया था। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

# शूरता की मिसाल-पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर

## ( 6 मार्च को पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस के अवसर पर प्रकाशित )

*–डॉ विवेक आर्य*

पंडित लेखराम इतिहास की उन महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे...आपके पूर्वज महाराजा रंजीत सिंह की फौज में थे इसलिए वीरता आपको विरासत में मिली थी। बचपन से ही आप स्वाभिमानी और दृढ़ विचारों के थे। एक बार आपको पाठशाला में प्यास लगी। मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी, मौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहा। आपने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत माँगी और न ही जूठा पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही बिता दिया। पढ़ने का आपको बहुत शौक था। मुंशी कन्हैयालाल अलाख्धारी की पुस्तकों से आपको स्वामी दयानंद जी का पता चला। अब लेखराम जी ने ऋषि दयानंद के सभी ग्रंथो का स्वाध्याय आरंभ कर दिया। पेशावर से चलकर अजमेर स्वामी दयानंद के दर्शनों के लिए पंडित जी पहुँच गए। जयपुर में एक बंगाली सज्जन ने पंडित जी से एक प्रश्न किया था कि आकाश भी व्यापक है और ब्रह्मा भी, दो व्यापक किस प्रकार एक साथ रह सकते हैं? पंडित जी से उसका उत्तर नहीं बन पाया था। पंडित जी ने स्वामी दयानंद से वही प्रश्न पूछा। स्वामी जी ने एक पत्थर उठाकर कहा कि इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं? मैंने कहा कि व्यापक है, फिर कहा कि क्या मिट्टी व्यापक है? मैंने कहा कि व्यापक है, फिर कहा कि क्या जल व्यापक है? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर कहा कि क्या आकाश और वायु? मैंने कहा कि व्यापक है, फिर कहा कि व्यापक है, फिर कहा कि क्या जल व्यापक है? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर कहा कि क्या आकाश और वायु? मैंने कहा कि व्यापक है, फिर कहा कि क्या परमात्मा व्यापक है? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर स्वामी जी बोले कहा कि देखो। कितनी चीजें हैं परन्तु सभी इसमें व्यापक है। वास्तव में बात यही है कि जो जिससे सूक्ष्म होती है वह उसमें व्यापक हो जाती है। ब्रह्मा चूँकि सबसे अति सूक्ष्म हैं इसलिए वह सर्वव्यापक हैं। यह उतर सुन कर पंडित जी की जिज्ञासा शांत हो गयी। आगे पंडित जी ने पूछा जीव ब्रह्मा की भिन्नता में कोई वेद प्रमाण बताएँ। स्वामी जी ने कहा यजुर्वेद का ४०वाँ अध्याय सारा जीव ब्रह्मा का भेद बतलाता है। इस प्रकार अपनी शंकाओं का समाधान कर पंडित जी वापस आकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लग गए।

## शुद्धि के रण में

कोट छुट्टा डेरा गाजी खान (अब पाकिस्तान) में कुछ हिन्दू युवक मुसलमान बनने जा रहे थे। पंडित जी के व्याख्यान सुनने पर ऐसा रंग चढ़ा की आर्य बन गए और इस्लाम को तिलांजलि दे दी। इनके नाम थे महाशय चोखानंद, श्री छबीलदास व महाशय खूबचंद जी, जब तीनों आर्य बन गए तो हिन्दुओं ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया। कुछ समय के बाद महाशय छबीलदास की माता का देहांत हो गया। उनकी अर्थी को उठाने वाले केवल ये तीन ही थे। महाशय खूबचंद की माता उन्हें वापस ले गयी। आप कमरे का ताला तोड़ कर वापिस संस्कार में आ मिले। तीनों युवकों ने वैदिक संस्कार से दाह कर्म किया। पौराणिकों ने एक चाल चली यह प्रसिद्ध कर दिया की आर्यों ने माता के शव को भून कर खा लिया है। यह तीनों युवक मुसलमान बन जाते तो हिन्दुओं को कोई फरक नहीं पड़ता था परन्तु पंडित लेखराम की कृपा से वैदिक धर्मी बन गए तो दुश्मन बन गए। इस प्रकार की मानसिकता के कारण तो हिन्दू आज भी गुलामी की मानसिकता में जी रहे हैं।

जम्मू के श्री ठाकुरदास मुसलमान होने जा रहे थे। पंडित जी उनसे जम्मू जाकर मिले और उन्हें मुसलमान होने से बचा लिया।

१८९१ में हैदराबाद सिंध के श्रीमंत सूर्यमल की संतान ने इस्लाम मत स्वीकार करने का मन बना लिया। पंडित पूर्णानंद जी को लेकर आप हैदराबाद पहुँचे। उस धनी परिवार के लड़के पंडित जी से मिलने के लिए तैयार नहीं थे। पर आप कहाँ मानने वाले थे। चार बार सेठ जी के पुत्र मेवाराम जी से मिलकर यह आग्रह किया कि मौलिवयों से उनका शास्त्रार्थ करवा दे। मौलवी सय्यद मुहम्मद अली शाह को तो प्रथम बार में ही निरुत्तर कर दिया। उसके बाद चार और मौलिवयों से पत्रों से विचार किया। आपने उनके सम्मुख मुसलमान मौलिवयों को हराकर उनकी धर्म रक्षा की।

वहीं सिंध में पंडित जी को पता चला की कुछ युवक ईसाई बनने वाले हैं। आप वहाँ पहुँच गए और अपने भाषण से वैदिक धर्म के विषय में प्रकाश डाला। एक पुस्तक आदम और इव पर लिख कर बाँटी जिससे कई युवक ईसाई होने से बच गए।

गंगोह जिला सहारनपुर की आर्यसमाज की स्थापना पंडित जी से दीक्षा लेकर कुछ आर्यों ने १८८५ में करी थी। कुछ वर्ष पहले तीन अग्रवाल भाई पतित होकर मुसलमान बन गए थे। आर्य समाज ने १८९४ में उन्हें शुद्ध करके वापिस वैदिक धर्मी बना दिया। आर्य समाज के विरुद्ध गंगोह में तूफान ही आ गया। श्री रहतूलाल जी भी आर्यसमाज के सदस्य थे। उनके पिता ने उनके शुद्धि में शामिल होने से मना

किया पर वे नहीं माने पिता ने बिरादरी का साथ दिया। उनकी पुत्र से बातचीत बंद हो गयी। पर रेहतुलाल जी कहाँ मानने वाले थे। उनका कहना था गृह त्याग कर सकता हूँ पर आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता हूँ। इस प्रकार पंडित लेखराम के तप का प्रभाव था कि उनके शिष्यों में भी वैदिक सिद्धांत की रक्षा हेतु भावना कूट-कूट कर भरी थी।

घासीपुर जिला मुज्जफरनगर में कुछ चौधरी मुसलमान बनने जा रहे थे। पंडित जी वहाँ एक तय की गयी तिथि को पहुँच गए। उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और साथ में मूँछे भी थी एक मौलाना ने उन्हें मुसलमान समझा और पूछा क्यों जी यह दाढ़ी तो ठीक है पर इन मूँछों का क्या राज है। पंडित जी बोले दाढ़ी तो बकरे की होती है मूँछ तो शेर की होती है। मौलाना समझ गया कि यह व्यक्ति मुसलमान नहीं है। तब पंडित जी ने अपना परिचय देकर शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। सभी मौलानाओं को परास्त करने के बाद पंडित जी ने वैदिक धर्म पर भाषण देकर सभी चौधरियों को मुसलमान बनने से बचा लिया।

१८९६ की एक घटना पंडित लेखराम के जीवन से हमें सर्वदा प्रेरणा देने वाली बनी रहेगी। पंडित जी प्रचार से वापिस आये तो उन्हें पता चला कि उनका पुत्र बीमार है। तभी उन्हें पता चला की मुस्तफाबाद में पाँच हिन्दू मुसलमान होने वाले हैं। आप घर जाकर दो घंटे में वापिस आ गए और मुस्तफाबाद के लिए निकल गए। आपने कहा की मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पाँच पुत्र अधिक प्यारे हैं, पीछे से आपका सवा साल का इकलौता पुत्र चल बसा। पंडित जी के पास शोक करने का समय कहाँ था। आप वापिस आकर वेद प्रचार के लिए वजीराबाद चले गए।

पंडित जी की तर्क शक्ति गजब थी। आपसे एक बार किसी ने प्रश्न किया कि हिन्दू इतनी बड़ी संख्या में मुसलमान कैसे हो गए। आपने सात कारण बताये १. मुसलमान आक्रमण में बलातपूर्वक मुसलमान बनाया गया २. मुसलमानी राज में जर, जोरू व जमीन देकर कई प्रतिष्ठित हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया। ३. इस्लामी काल में उर्दू, फारसी की शिक्षा एवं संस्कृत की दुर्गति के कारण बने ४. हिन्दुओं में पुनर्विवाह न होने के कारण व सती प्रथा पर रोक लगने के बाद हिन्दू औरतों ने मुसलमान के घर की शोभा बढ़ाई तथा अगर किसी हिन्दू युवक का मुसलमान स्त्री से सम्बन्ध हुआ तो उसे जाति से निकाल कर मुसलमान बना दिया गया। ५. मूर्तिपूजा की कुरीति के कारण कई हिन्दू विधर्मी बने ६. मुसलमानी वेश्याओं ने कई हिन्दुओं को फँसा कर मुसलमान बना दिया ७. वैदिक धर्म का प्रचार न होने के कारण मुसलमान बने।

अगर गहराई से सोचा जाये तो पंडित जी ने हिन्दुओं को जाति रक्षा के लिए

उपाय बता दिए हैं। अगर अब भी नहीं सुधरे तो हिन्दू कब सुधरेंगे।

**पंडितजी और गुलाम मिर्जा अहमद**

पंडित जी के काल में कादियान, जिला गुरुदासपुर पंजाब में इस्लाम के एक नए मत की वृद्धि हुई जिसकी स्थापना मिर्जा गुलाम अहमद ने करी थी। इस्लाम के मानने वाले मुहम्मद साहिब को आखिरी पैगम्बर मानते हैं। मिर्जा ने अपने आपको कभी कृष्ण, कभी नानक, कभी ईसा मसीह कभी इस्लाम का आखिरी पैगम्बर घोषित कर दिया तथा अपने मत को चलने के लिए नई-नई भविष्यवाणियाँ और इल्हामो का ढोल पीटने लगा।

एक उदाहरण मिर्जा द्वारा लिखित पुस्तक "वही हमारा कृष्ण" से लेते हैं इस पुस्तक में लिखा है–उसने (ईश्वर ने) हिन्दुओं की उन्नति और सुधार के लिए निश्कलंकी अवतार को भेज दिया है जो ठीक उस युग में आया है जिस युग की कृष्ण जी ने पहिले से सूचना दे रखी है। उस निष्कलंक अवतार का नाम मिर्जा गुलाम अहमद है जो कादियान जिला गुरुदासपुर में प्रकट हुए हैं। खुदा ने उनके हाथ पर सहस्त्रों निशान दिखाये हैं, जो लोग उन पर इमान लेट हैं उनको खुदा ताला बड़ा नूर बख्शाता है। उनकी प्रार्थनाएँ सुनता है और उनकी सिफारिश पर लोगों के कष्ट दूर करता है, प्रतिष्ठा देता है। आपको चाहिए कि उनकी शिक्षाओं को पढ़ कर नूर प्राप्त करे। यदि कोई संदेह हो तो परमात्मा से प्रार्थना करें की हे परमेश्वर! यदि यह व्यक्ति जो तेरी ओर से होने की घोषणा करता है और अपने आपको निष्कलंक अवतार कहता है। अपनी घोषणा में सच्चा है तो उसके मानने की हमें शक्ति प्रदान कर और हमारे मन को इस को इस पर इमान लेने को खोल दो। पुनः आप देखेंगे की परमात्मा अवश्य आपको परोक्ष निशानों से उसकी सत्यता पर निश्चय दिलवाएगा। तो आप सत्य हृदय से मेरी और प्रेरित हो और अपनी कठिनाइयों के लिए प्रार्थना करावे अल्लाह ताला आपकी कठिनाइयों को दूर करेगा और मुराद पूरी करेगा। अल्लाह आपके साथ हो, पृष्ठ ६, ७, ८ वही हमारा कृष्ण।

पाठकगण स्वयं समझ गए होंगे की किस प्रकार मिर्जा अपनी कुटिल नीतिओं से मासूम हिन्दुओं को बेवकूफ बनाने की चेष्टा कर रहा था पर पंडित लेखराम जैसे रणवीर के रहते उसकी दाल नहीं गली।

पंडित जी ने सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए मिर्जा के आगे तीन प्रश्न रखे।

१. पहले मिर्जा जी अपने इल्हामी खुदा से धारावाही संस्कृत बोलना सीख कर आर्यसमाज के दो सुयोग्य विद्वानों पंडित देवदत शास्त्री व पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा का संस्कृत वार्तालाप में नाक में दम कर दे।

२. ६ दर्शनों में से सिर्फ तीन के आर्ष भाष्य मिलते हैं। शेष तीन के अनुवाद मिर्जा

जी अपने खुदा से मंगवा ले तो मैं मिर्जा के मत को स्वीकार कर लूँगा।

३. मुझे 20 वर्ष से बवासीर का रोग है। यदि तीन मास में मिर्जा अपनी प्रार्थना शक्ति से उन्हें ठीक कर दे तो में मिर्जा के पक्ष को स्वीकार कर लूँगा।

पंडित जी ने उससे पत्र लिखना जारी रखा। तंग आकर मिर्जा ने लिखा कि यहीं कादियान आकर क्यों नहीं चमत्कार देख लेते। सोचा था की न पंडित जी का कादियान आना होगा और बला भी टल जाएगी। पर पंडित जी अपनी धुन के पक्के थे मिर्जा गुलाम अहमद की कोठी पर कादियान पहुँच गए। दो मास तक पंडित जी कादियान में रहे पर मिर्जा गुलाम अहमद कोई भी चमत्कार नहीं दिखा सका।

इस खीज से आर्यसमाज और पंडित लेखराम को अपना कट्टर दुश्मन मानकर मिर्जा ने आर्यसमाज के विरुद्ध दुष्प्रचार आरंभ कर दिया।

मिर्जा ने ब्राहिने अहमदिया नामक पुस्तक चंदा मांग कर छपवाई। पंडित जी ने उसका उत्तर तकज़ीब ब्राहिने अहमदिया लिखकर दिया।

मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या (आर्यों की आँख का सुरमा) लिखा जिसका पंडित जी ने उत्तर नुस्खाये ख्बते अहम (अहमदी ख्बत का ईलाज) लिख कर दिया। मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या में यह भविष्यवाणी करी कि एक वर्ष के भीतर पंडित जी की मौत हो जाएगी। मिर्जा की यह भविष्यवाणी गलत निकली और पंडित इस बात के ११ वर्ष बाद तक जीवित रहे।

पंडित जी की तपस्या से लाखों हिन्दू युवक मुसलमान होने से बच गए। उनका हिन्दू जाति पर सदा उपकार रहेगा।

**पंडित जी का अमर बलिदान**

मार्च १८९७ में एक व्यक्ति पंडित लेखराम के पास आया। उसका कहना था की वो पहले हिन्दू था बाद में मुसलमान हो गया अब फिर से शुद्ध होकर हिन्दू बनना चाहता है। वह पंडित जी के घर में ही रहने लगा और वहीं भोजन करने लगा। ६ मार्च १८९७ को पंडित जी घर में स्वामी दयानंद के जीवन चरित्र पर कार्य कर रहे थे। तभी उन्होंने एक अंगड़ाई ली की उस दुष्ट ने पंडित जी को छुरा मार दिया और भाग गया। पंडित जी को हस्पताल लेकर जाया गया जहाँ रात को दो बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए। पंडित जी को अपने प्राणों की चिंता नहीं थी उन्हें चिंता थी तो वैदिक धर्म की। उनका आखिरी सन्देश भी यही था की "तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए।" पंडित जी का जीवन आज के हिन्दू युवको के लिए प्रेरणा दायक है कि कभी विधर्मियों से डरे नहीं और जो निशक्त हैं उनका सदा साथ देवे।

# वर्ष 2017-18 के प्रकाशन

**Mother's Gift to the Young by Kanchan Arya Rs. 120.00**

The book is written for the spiritual upliftment and character building of the Youngs. The authoress has explained the truth of the human life in the form of letters from a mother to her children. The mother has tried by all possible means to save and protect the children from physical, spiritual and social downfall.

**मैं दयानन्द बोल रहा हूँ डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्ड रु.95.00**

स्वामी दयानन्द के 500 से अधिक सुवचनों का विषयवार संकलन, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी।

**अथातो धर्म जिज्ञासा श्री वेद प्रकाश रु. 225.00**

ईश्वर द्वारा जीवन के लिए अनिवार्य मूलभूत व्यवस्थायें जैसे-सूर्य, पृथ्वी, प्राणवायु इत्यादि एक समान हैं, इसी प्रकार ईश्वर ने ही मानव मात्र के लिए एक समान नियमों का विधान किया है, जो शाश्वत एवं सनातन हैं, जिन्हें धर्म कहा जाता है, कुछ सीमित मानव समूहों की मान्यताएँ, रीति रिवाज और विशिष्ट पूजा पद्धतियाँ धर्म नहीं हैं धर्म के यथार्थ स्वरूप का दार्शनिक विवेचन।

| | | |
|---|---|---|
| **प्यारा ऋषि** | **महात्मा आनन्द स्वामी** | **रु. 20.00** |
| **नशा नाश की निशानी: शराब** | **आचार्य ब्र. नन्दकिशोर** | **रु. 15.00** |
| **वैदिक धर्म जोड़ता है-तोड़ता नहीं** | **आचार्य ब्र. नन्दकिशोर** | **रु. 20.00** |
| **धर्म और मानवता** | **डॉ. मनोहरलाल आर्य** | **रु. 75.00** |
| **गायत्री महिमा** | **डॉ. मनोहरलाल आर्य** | **रु. 75.00** |
| **यज्ञमय जीवन और वृद्धावस्था** | **डॉ. मनोहरलाल आर्य** | **रु. 75.00** |
| **योग एक सरल परिचय** | **डॉ. मनोहरलाल आर्य** | **रु. 75.00** |
| **कर्तव्यों की पूर्णता: पंचमहायज्ञ** | **डॉ. मनोहरलाल आर्य** | **रु. 75.00** |
| **ब्रह्मनाद** | **डॉ. मनोहरलाल आर्य** | **रु. 75.00** |

अप्रैल २०१८ Registered with Regn. of News Paper for India
वेदप्रकाश R.No. 627/57 Regd. No. DL(DG-11)/8030/2018-20, U(DGPO) 01/2018-20
Posted at Delhi RMS, Delhi-110006

# अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

**KNOW THY VEDAS by Vidya Sagar Garg Rs. 120.00**

Vedas answer many unanswered questions regarding life, its purpose and its destination. The approach of the author is logical, rational, natural and scientific.

**प्राचीन विमान कला का शोध शिवकर बापूजी तलपदे रु.150.00**

आधुनिक काल में विमानविद्या पर भारतीय द्वारा लिखित पुस्तक। प्राचीन भारतवर्ष के विमानों के स्वरूप एंव वेदों में विद्यमान विमानविद्या के मूलभूत सिद्धान्तों की विस्तारपूर्वक व्याख्या।

| | | |
|---|---|---|
| **हिन्दू संगठन क्यों और कैसे** | **स्वामी श्रद्धानन्द** | **रु. 20.00** |
| **वेदों को जानों** | **डॉ. विवेक आर्य** | **रु. 20.00** |
| **स्वामी दयानन्द सरस्वती** | **संतराम वत्स्य** | **रु. 20.00** |
| **गागर में सागर** | **मुमुक्षु आर्य** | **रु. 20.00** |
| **महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय** | **कु. कंचन आर्य** | **रु. 20.00** |
| **शयन से पूर्व प्रार्थना** | **प्रो. उमाकान्त उपाध्याय** | **रु. 40.00** |
| **ईश, केन, प्रश्न उपनिषद** | **महात्मा नारायण स्वामी** | **रु. 20.00** |
| **धर्म का आदि स्रोत** | **श्री पं. गंगाप्रसाद** | **रु. 20.00** |
| **भाई परमानन्द** | **श्री बनारसी सिंह** | **रु. 10.00** |
| **त्रैतवाद का उद्भव और विकास** | **डॉ. योगेन्द्र शास्त्री** | **रु. 20.00** |

**प्राप्ति स्थानः विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द**
4408, नई सड़क, दिल्ली-6, दूरभाष 23977216
Email: ajayarya16@gmail.com Web: www.vedicbooks.com